शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

नाटक 'कोर्ट मार्शल' का मूल्यांकन

अकबरअली शेख
पार्वतीबाई चौगुले कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स एंड साईंस (ऑटोनॉमस)
मार्गाव - गोवा, भारत

शोध संक्षेप

सृष्टि के आरंभ से प्राकृतिक सम्पदा पर सभी का समान अधिकार था। सभी अपनी जरूरतों की पूर्ति के लिए समान रूप से प्रयत्नशील और एक दूसरे के प्रति सहयोगी बने रहते थे। प्राकृतिक रूप से एक दूसरे के कार्य में हस्तक्षेप नहीं करते थे। भारत में एक ऐसा समाज था जो एक दूसरे पर आश्रित था। जब से संपत्ति के संचय की भावना का विकास मनुष्य के मन में हुआ तब से असंतुलन विषमता और असमानता जैसी विकृतियाँ आनी शुरू हुई। इन्हीं विकृतियों को हम नाटककार स्वदेश दीपक द्वारा रचित 'कोर्ट मार्शल' के आलोक में देख सकते हैं। प्रतिष्ठित नाटककार स्वदेश दीपक के नाटक 'कोर्ट मार्शल' में दलित जवानों पर हो रहे अत्याचार, मानसिक उत्पीड़न, शोषण आदि का चित्रण किया गया है।

प्रस्तावना

विभिन्न विद्वानों के मतानुसार दलित शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत 'धातु' में 'दल' से हुई है। 'संस्कृत-हिन्दी कोश'के अनुसार दलित शब्द का अर्थ है- 'दलित: (भू. क. कृ) (दल+क्त) टूटा हुआ, चीरा हुआ,फाड़ा हुआ, फटा हुआ, टुकड़े-टुकड़े हुआ खुला हुआ, फैलाया हुआ आदि।[1] अर्थात- ऐसे टूटे हुए लोग जो समाज में सबसे निम्न समझे जाते हैं। हतोत्साहित, अधिकारों से वंचित, हरिजन,शोषित, शूद्र आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

वहीं 'The Oxford Hindi-English Dictionary' R.S Mc Geogor के अनुसार 'दलित' का अर्थ है- 'अंत्यज'-"ADJand M born in the lowest cast (s)untouchable."[2]

भारतीय समाज चार वर्गों में विभाजित है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। इनमें शूद्र वर्ग को अछूत कहा गया। भारतीय समाज में इस वर्ग की स्थिति अत्यंत दयनीय रही है। इन्हें समस्त प्रकार के अधिकारों से वंचित रखा गया। भारत में पुनर्जागरण आन्दोलन के दौरान समाज सुधार के अनेक प्रयत्न किये गए। दलितों और वंचितों को उनके अधिकार दिलाने और छुआछूत की भावना समाप्त करने के लिए जनजाग्रति अभियान चलाये गए। साहित्यिक क्षेत्र ने भी अपनी भूमिका का निर्वाह किया। दृश्य-श्रव्य माध्यमों में नाटक सबसे सशक्त विधा है। दर्शकों के मानस पटल पर इसका प्रभाव अमिट होता है। नाट्य विधा में दलितों के उत्थान संबंधी अनेक नाटक लिखे गए। स्वदेश दीपक का नाटक 'कोर्ट मार्शल' काफी चर्चित रहा। यह नाटक दलितों की स्थिति का वास्तविक चित्रण करता है।

कोर्ट मार्शल का मूल्यांकन

सन 1991 में प्रकाशित नाटक 'कोर्टमार्शल' दो अंकों में विभक्त हैं।नाटक का आरंभ कर्नल सूरत सिंह के कथन से होता है। "मेरा नाम कर्नल सूरत सिंह है। प्रीजाइडिंग ऑफिसर ऑफ दिस कोर्ट मार्शल।"[3] प्रस्तुत नाटक के प्रमुख पात्र निम्नवर्गीय जवान रामचंदर का कोर्ट मार्शल किया जा रहा है। कोर्ट मार्शल अन्य मुकदमों से

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भिन्न होता है। इसका प्रयोग विशेषकर आर्मी में किया जाता है। यदि कोई आर्मी ऑफिसर किसी प्रकार का अपराध करता है तो आर्मी लॉ के मुताबिक अपराधी को दंडित किया जाता है।मिलिटरी कोर्ट, मिलिटरी नियम के तहत आरोपी को फाँसी तक की सजा दे सकते हैं। आर्मी में चार तरह के कोर्ट मार्शल होते हैं।

जनरल कोर्ट मार्शल

डिस्ट्रिक्ट कोर्ट मार्शल

सम्मरी जनरल कोर्ट मार्शल और

सम्मरी कोर्ट मार्शल [4]

नाटक में रामचंदर ने एक अपराध किया है। जानबूझकर होशो-हवास में कत्ल करने पर कोर्ट मार्शल। इंडियन आर्मी एक्ट 69 और इंडियन पीनल कोड की दफा 302 के तहत रामचंदर का कोर्ट मार्शल किया गया।

दस जून की रात को रामचंदर गार्ड ड्यूटी पर था। उसी रात नौ बजे रेजीमेंट के दो अफसर कैप्टन मोहन वर्मा और कैप्टन कपूर गार्ड चौकी के पास से गुजर रहे थे। आर्मी का नियम है कि प्रवेश करने से पहले गार्ड ड्यूटी पर तैनात जवान से पासवर्ड कह कर अंदर जाने की अनुमति ली जाती है। उस दिन का पासवर्ड था 'कालाचाँद'। रेजीमेंट के दोनों अफसर जवान रामचंदर को बिना पासवर्ड बोले आगे बढ़ गए। कारण यह हो सकता है कि रामचंदर का निचली जाति का होना। इसलिए दोनों रामचंदर से अनुमति नहीं लेना चाहते थे। पासवर्ड न पूछने की वजह से रामचंदर ने सरकारी राइफल से उन पर गोली चला दी। कैप्टन मोहन वर्मा की हादसे पर ही मौत हो गयी और कैप्टन कपूर गंभीर रूप से घायल हो गए। क्योंकि गोली उसके बाएँ कंधे के पास लगी थी। इस कोर्ट मार्शल का मुख्य उद्देश्य आरोपी को सजा दिलवाने के साथ ही साथ, रामचंदर ने किन परिस्थितियों में गोली चलाई आदि का खुलासा करना था।

इस कोर्ट मार्शल के प्रोसेसिंग अफसर कर्नल सूरत सिंह है। जिनके हाथ से आज तक कोई मुजरिम नहीं बच सका। उन्हीं के साथ दो अफसर सहायक प्रोसेसिंग अफसर के रूप में है। कैप्टन मोहन वर्मा और कपूर की ओर से मेजर अजय पुरी और रामचंदर का बचाव बिकाश राय करते हैं। मेजर अजय पुरी और बिकाश राय को बोलने का मौका दिया जाता है। दोनों ओर से एक से एक दलीलें पेश की जाती हैं। रामचंद को अपने बचाव में बोलने का मौका दिया जाता है। रामचंदर से पूछा जाता है कि क्या तुमने गोली चलाने से पहले चैलेंज किया था ? यह एक मौका था जिसके जरिये रामचंदर बच सकता था पर रामचंदर कहता है कि सर मैंने चैलेंज नहीं किया।

इसी स्थिति को यदि आज के परिप्रेक्ष्य में देखें तो यदि कोई भी रामचंदर के स्थान पर होता तो कह देता कि चैलेंज किया था। आज कोर्ट-कचहरियों में झूठ के सहारे मुकदमे जीते जा रहे हैं। पैसों के बल पर गवाहों को खरीदना, उन्हें गुमराह करना, सबूतों को मिटाना, अफसरों को रिश्वत देना आदि के द्वारा आज मुकदमे जीते जा रहे हैं।

नाटककार ने बिकाश राय के माध्यम से न्याय व्यवस्था पर भी प्रहार किया है, जिसे समाज के चार स्तंभों में गिना जाता है। जहाँ सुनवाई से पहले ही व्यक्ति को दोषी ठहराया जाता है वहाँ सुनवाई की कोई आवश्यकता नहीं है। बिकाश राय का कथन निम्न प्रकार से है - "सर! आपने मुकदमे की सुनवाई से पहले ही निर्णय ले लिया कि खूनी कौन है। फिर यह कोर्ट मार्शल क्यों ? इस ढकोसले की क्या जरूरत! आप चाहें तो मैं

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

यह केस लड़ने से लिखकर इनकार कर दूँ क्योंकि कोर्ट तो पहले ही फैला ले चुकी है।"[5]

रामचंदर का निम्न जाति के होने के बावजूद आर्मी में गार्ड ड्यूटी करना कैप्टन वर्मा और कपूर को पसंद नहीं है। कपूर चीखते हुए कहता है "चिट्टे चूहड़े! हराम की सट्ट! तेरी माँ जरूर किसी कपूर या वर्मा के साथ सोई होगी।" इसी प्रकार लेखक शिवमूर्ति द्वारा रचित कसाइबड़ा में दलित स्त्री शनीचरी पर इल्जाम लगाया जाता है। शनिचरी को बगावत करते देख प्रधानजी कहता है- इसे लीडरजी की लंगेबाजी बताया, "चुनाव का पैंतरा भांज रहा है साला। मुझे बदनाम करने के लिए शनिचरी को फोड़ा है। देखते नहीं आप लोग आधी-आधी रात तक उसकी झोपड़ी में घुसा रहता है। इस तरह की सोच रखने वाले उस कोने से भी ज्यादा गंदे है, जहाँ लोग थूकते हैं। क्योंकि अपनी जान बचाने के लिए निर्दोष विधवा स्त्री पर ऐसे आरोप लगाना अमानवीयता का प्रतीक।

बलवान सिंह के द्वारा यह बात सामने आती है कि कैप्टन कपूर रामचंदर को निजी नौकर की भाँति अपने घर में रखता है। कैप्टन कपूर के घर जलसा होने के कारण मेहमानों से घर भरा था। ड्राइंगरूम में एक छोटी बच्ची ने पोटी कर दी। रामचंदर ने साहब की बच्ची की टट्टी उठाने से माना कर दिया। तभी कपूर सभी मेहमानों के समक्ष रामचंदर को थप्पड़ मारते हुए कहता है कि जात का चूहड़ा और टट्टी उठाने में शर्म आती है। तुम्हारे पुरखे-पुश्ते हम लोगों की टट्टी की टोकरी उठाते आ रहे हैं। कैप्टन कपूर यहाँ तक कहते हैं कि अब खानदानी लोग फौज में भर्ती नहीं होते। भूखमंगे और निम्न जाति के लोग भर्ती हो रहे हैं। भर-पेट खाना मिलेगा तो उनका दिमाग फिरेगा ही। ये कैसा सभ्य समाज है ? जहां पर निहत्थे व्यक्ति को इतनी बेरहमी से प्राताड़ित किया जाता है। दलित ही नहीं तमाम निम्न वर्ग के साथ हो रहे शोषण से भी नाटककार ने रूबरू कराया है। जहाँ लोग दूसरे घरों में काम करने जाते हैं वहाँ उनके साथ जानवरों जैसा बर्ताव किया जाता है। रामचंदर इसका सटीक उदाहरण है।

प्रताड़ित रामचंदर अनेक बार कैप्टन कपूर की शिकायत करता है पर उसकी शिकायत को नजर अंदाज़ किया जाता है। आज भी समाज में यही वर्षों पुरानी परंपरा चलन में है। भारत के अनेक राज्यों या दूर दराज के गाँवों में आज भी ऊँच-नीच, भेद-भाव, वर्ग व्यवस्था, शोषण, अत्याचार विद्यमान है। कोर्ट मार्शल में जहां रामचंदर दलित होने के कारण प्रताड़ित हो रहा है वैसे ही अन्य तरीकों से आज भी भारतीय सैनिक प्रताड़ित हो रहे हैं। रामचंदर दलित जवानों का प्रतिनिधित्व करने के साथ-साथ उन तमाम जवानों का प्रतिनिधित्व कर रहा है जो आर्मी में प्रताड़ित हो रहे है।

दलित व्यक्ति चाहे जितनी तरक्की कर ले निश्चित रूप से उस पर प्रश्न चिह्न लगाए जाते हैं। नाटक में वर्णित पात्र रामचंदर के दौड़ में जीतने पर प्रश्न चिह्न लगाया गया है। जब रामचंदर कैप्टन कपूर को दौड़ में हराता है तो वह कहता है कि फौज में भरती होने से पहले रामचंदर गाँव में डंकर चराता था। सारा दिन जानवरों के पीछे दौड़ता होगा। मुझे दौड़ में हराकर वह सुपरमैन तो नहीं बन गया।[7]

इस हार के कारण वह रामचंदर को प्रतिदिन अपमानित करता है। रामचंदर का निम्न जाति होने के बावजूद आर्मी में कार्य करना कपूर को पसंद नहीं। इसलिए हर वक्त उसे प्रताड़ित करने का मौका तलाशता है। आर्मी के नियम के तहत कपूर रामचंदर को कुछ नहीं कर सकता था वरना

वह उसका खून करने के लिए भी तैयार है। इसलिए उसे मानसिक रूप से प्रताड़ित करता है। आकाश और जमीन के बीच जितनी दूरी है वर्तमान समय में उतनी दूरी सवर्ण और निम्न जाति में है। भले ही महानगरों में ऐसी स्थिति न हो पर भारत के गाँव आज भी इन बेड़ियों में जकड़े हुए हैं।

कोर्ट मार्शल में दोनों तरफ की दलीलें सुनने के बाद निश्चिय हो जाता है कि अपने आपको रईस, खानदानी समझने वाला कैप्टन कपूर रामचंदर को हर वक्त चूहड़ा चमार, नीची जाति कह कर प्रताड़ित किया करता था। जिसके फलस्वरूप रामचंदर ने इस प्रकार का अपराध किया है। जिसके चलते रामचंदर को फांसी की सजा दी जाती है। जिनका कोई दोष नहीं होता उन्हीं को मौत के घाट उतारा जाता है। रामचंदर की ही भांति शैलेंद्र सागर द्वारा रचित उपन्यास 'एक सुबह यह भी' की रामरती, शिवमूर्ति द्वारा रचित कहानी 'कसाईबाड़ा' की शनीचरी आदि का कोई दोष न होने के बावजूद भी मौत के घाट उतारा जाता है।

निष्कर्ष

स्वदेश दीपक का नाटक 'कोर्ट मार्शल' दलित जीवन पर आधारित है। दलित जीवन की त्रासदी के साथ-साथ दलित चेतना की अभिव्यक्ति को भी नाटककार ने दर्शाया है। नाटक का मूल उद्देश्य महज कथा कहना नहीं बल्कि भारतीय समाज में व्याप्त भेद-भाव, ऊंच-नीच, जाति व्यवस्था, सामंती प्रवृत्ति आदि को अभिव्यक्त करना है, जिससे हम अपने दैनिक जीवन में टकरा रहे हैं। वहीं दूसरी ओर कैप्टन कपूर भारतीय सेना और एक अफसर के नाम पर धब्बा है। वह एक ऐसा समाजकंटक है जो समाज के ताने-बाने को बिगाड़ने के लिए बैठा है। वर्ग भेद को पीछे छोड़ अमेरिका, जापान जैसे देश आज प्रगति के मार्ग पर अग्रसर है। वहीं भारत आज भी जातिगत भेद-भाव जैसी बेड़ियों में जकड़ा हुआ है। जातिगत भेदभाव, वर्ण व्यवस्था, वर्ग व्यवस्था आदि समाज को खोखला करने वाले जन्तु हैं। फलस्वरूप समाज विकास की अपेक्षा पतन की ओर उन्मुख है। रचनाकार इन्हीं विकृतियों को खत्म कर समानता का भाव पैदा करता है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 'संस्कृत साहित्य कोश- (सं) वा. शि. आप्टे, पृष्ठ 451

2 The Oxford Hindi-English Dictionary- R. S.Gragor, P.6

3 कोर्ट मार्शल,स्वदेश दीपक, पृष्ठ 24

4 One India Hindi 15 July2018

5 कोर्ट मार्शल,स्वदेश दीपक, पृष्ठ 32,33

6 कोर्ट मार्शल,स्वदेश दीपक, पृष्ठ 96

7 कोर्ट मार्शल,स्वदेश दीपक, पृष्ठ 91